

अध्याय ~6

समास

शब्द-प्रयोग में संक्षिप्तता पर बल होता है। अतः शब्दों को पास-पास लाने की प्रक्रिया से ही समास का जन्म हुआ। समास शब्द के स्तर की प्रक्रिया है। इसमें एक से अधिक शब्द मिलकर एक नए शब्द का निर्माण करते हैं।



- समास दो शब्दों के मेल से बना है—सम (संक्षिप्त) + आस (कथन), जिसका अर्थ होता है—संक्षिप्तीकरण करना।
- जब दो या दो से अधिक शब्दों के परस्पर सम्बन्ध के मेल से नए सार्थक शब्द का निर्माण होता है, तो उसे समास कहते हैं।
- समास के नियमों के द्वारा निर्मित पद **समस्त पद** या **सामासिक पद** कहलाता है।
- समास विग्रह सामासिक शब्दों के बीच के सम्बन्धों को स्पष्ट करना समास विग्रह कहलाता है। अन्य शब्दों में, किसी सामासिक पद के (समस्त पद) सभी पदों को अलग-अलग किए जाने की प्रक्रिया समास विग्रह कहलाती है; जैसे—‘चरणकमल’ का विग्रह है ‘कमल के समान चरण’ तथा ‘नीलकण्ठ’ का विग्रह है ‘नीला है जो कण्ठ’ या नीला है कण्ठ जिसका।
- समास में प्रायः दो पद **पूर्वपद** (पहला पद) तथा **उत्तरपद** (दूसरा पद) होते हैं; जैसे—‘प्रतिदिन’ में पूर्वपद ‘प्रति’ तथा उत्तरपद ‘दिन’ है।
- समास प्रक्रिया के द्वारा दो पदों के बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है; जैसे—‘दयासागर’ एक सामासिक पद है। इसका समास विग्रह ‘दया का सागर’ होगा। इस उदाहरण में ‘दया’ और ‘सागर’ इन दो शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले ‘का’ प्रत्यय का लोप हो गया और एक स्वतन्त्र शब्द ‘दयासागर’ बन गया।

समास के प्रकार

समास के मुख्यतः छः प्रकार होते हैं

- | | | |
|-------------------|------------------|-------------------|
| 1. अव्ययीभाव समास | 2. तत्पुरुष समास | 3. कर्मधारय समास |
| 4. द्विगु समास | 5. द्वंद्व समास | 6. बहुव्रीहि समास |

पदों की प्रधानता के अनुसार समास को निम्न भागों में विभाजित किया गया है

- | | | |
|--------------------|---|---|
| • पूर्वपद प्रधान | — | अव्ययीभाव समास |
| • उत्तरपद प्रधान | — | तत्पुरुष, द्विगु, कर्मधारय समास |
| • दोनों पद प्रधान | — | द्वंद्व समास |
| • दोनों पद अप्रधान | — | बहुव्रीहि समास (अन्य तीसरा अर्थ प्रधान) |

1. अव्ययीभाव समास

जिस समास में **पूर्वपद** (पहला पद) **अव्यय** तथा **प्रधान** या उपसर्ग हो, अव्ययीभाव समास कहलाता है। अव्यय वह पद होता है, जिसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता। यह वाक्य में क्रिया-विशेषण का कार्य करता है।

पहचान का नियम जहाँ वाक्य में पहला पद आ, अनु, भर, प्रति, यथा, हर आदि हो, वहाँ अव्ययीभाव समास (Adverbial Compound) होता है; जैसे—

पूर्वपद	उत्तरपद	समस्त पद	विग्रह
यथा + स्थान	=	यथास्थान	स्थान के अनुसार
यथा + समय	=	यथासमय	समय के अनुसार
प्रति + दिन	=	प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
प्रति + कूल	=	प्रतिकूल	इच्छा के विरुद्ध
आ + जीवन	=	आजीवन	सम्पूर्ण जीवन
भर + पूरा	=	भरपूर	पूरा भर के
भर + पेट	=	भरपेट	पेट भर के
निस् + संदेह	=	निस्संदेह	बिना संदेह के

2. तत्पुरुष समास

जिस समास में **पूर्वपद** **अप्रधान** तथा **उत्तरपद** (बाद वाला पद) **प्रधान** हो, तत्पुरुष समास (Determinative Compound) कहलाता है। इसमें दोनों पदों के बीच **कारक** का लोप रहता है।

तत्पुरुष समास के भेद

कारक लोप के आधार पर तथा विभक्तियों के नामों के अनुसार तत्पुरुष समास के छः भेद हैं

- (i) **कर्म तत्पुरुष** (द्वितीय तत्पुरुष) जहाँ कर्म कारक की विभक्ति ‘को’ का लोप हो; जैसे—

समस्त पद	विग्रह
मतदाता	= मत को देने वाला
गिरहकट	= गिरह को काटने वाला
ग्रामगत	= ग्राम को गया हुआ
यशप्राप्त	= यश को प्राप्त
ग्रन्थकार	= ग्रन्थ को लिखने वाला
माखनचोर	= माखन को चुराने वाला
सम्मानप्राप्त	= सम्मान को प्राप्त
स्वर्गगत	= स्वर्ग को गया हुआ
गगनचुम्बी	= गगन को चूमने वाला
रथचालक	= रथ को चलाने वाला
चिड़ीमार	= चिड़ियों को मारने वाला
जेबकतरा	= जेब को कतरने वाला

- (ii) **करण तत्पुरुष** (तृतीय तत्पुरुष) जहाँ करण कारक की विभक्तियों 'से' एवं 'के द्वारा' का लोप हो; जैसे—

समस्त पद	विग्रह
जन्मजात	= जन्म से उत्पन्न
मुँहमाँगा	= मुँह से माँगा
गुणहीन	= गुणों से हीन
शोकाकुल	= शोक से आकुल
करुणापूर्ण	= करुणा से पूर्ण
कष्टसाध्य	= कष्ट से साध्य
शराहत	= शर (बाण) से आहत
मनचाहा	= मन से चाहा
भयाकुल	= भय से आकुल
वाल्मीकिरचित	= वाल्मीकि द्वारा रचित
सूरचित	= सूरदास द्वारा रचित

- (iii) **सम्प्रदान तत्पुरुष** (चतुर्थी तत्पुरुष) जहाँ सम्प्रदान कारक 'के लिए' चिह्न का लोप हो; जैसे—

समस्त पद	विग्रह
हथकड़ी	= हाथ के लिए कड़ी
सत्याग्रह	= सत्य के लिए आग्रह
युद्धभूमि	= युद्ध के लिए भूमि
प्रयोगशाला	= प्रयोग के लिए शाला
रसोईघर	= रसोई के लिए घर
यज्ञशाला	= यज्ञ के लिए शाला
देशार्पण	= देश के लिए अर्पण
छात्रावास	= छात्रों के लिए आवास
विद्यालय	= विद्या के लिए आलय
सभाभवन	= सभा के लिए भवन

- (iv) **अपादान तत्पुरुष** (पंचमी तत्पुरुष) जहाँ अपादान कारक चिह्न 'से' (अलग होने का भाव) का लोप हो; जैसे—

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
धनहीन	= धन से हीन	दूरागत	= दूर से आगत
भयभीत	= भय से भीत	जलहीन	= जल से हीन
जन्मान्ध	= जन्म से अन्धा	पापमुक्त	= पाप से मुक्त
ऋणमुक्त	= ऋण से मुक्त	शोकग्रस्त	= शोक से ग्रस्त
गुणहीन	= गुण से हीन	मदांध	= मद से अन्धा
पथभ्रष्ट	= पथ से भ्रष्ट	धर्मविरत	= धर्म से विरत
रोगमुक्त	= रोग से मुक्त	राजद्रोह	= राजा से द्रोह

- (v) **सम्बन्ध तत्पुरुष** (षष्ठी तत्पुरुष) जहाँ सम्बन्ध कारक चिह्न 'का', 'की', 'के' का लोप हो जाता है; जैसे—

समस्त पद	विग्रह
प्रेमसागर	= प्रेम का सागर
दिनचर्या	= दिन की चर्या
भारतरत्न	= भारत का रत्न
भूदान	= भू (भूमि) का दान
राष्ट्रगौरव	= राष्ट्र का गौरव

पुष्पवर्षा	= पुष्पों की वर्षा
उद्योगपति	= उद्योग का पति
देशरक्षा	= देश की रक्षा
गृहस्वामी	= गृह (घर) का स्वामी
पराधीन	= दूसरों के अधीन

- (vi) **अधिकरण तत्पुरुष** (सप्तमी तत्पुरुष) जहाँ अधिकरण कारक चिह्न 'में', 'पर' का लोप हो; जैसे—

समस्त पद	विग्रह
नीतिनिपुण	= नीति में निपुण
आत्मविश्वास	= आत्मा पर विश्वास
घुड़सवार	= घोड़े पर सवार
गृह प्रवेश	= गृह में प्रवेश
पर्वतारोहण	= पर्वत पर आरोहण
जलज	= जल में जन्मा
आपबीती	= आप पर बीती
ग्रामवास	= ग्राम में वास
नरोत्तम	= नरों में उत्तम
जलसमाधि	= जल में समाधि

तत्पुरुष समास के उपभेद

तत्पुरुष समास के कुछ मुख्य उपभेद भी हैं

1. **नञ् तत्पुरुष समास** जिस समास में 'न' पूर्वपद में निषेधसूचक या नकारात्मक शब्दों का प्रयोग हो उसे नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं। इसमें अ, अन, गैर, ना आदि शब्दों का प्रयोग होता है; जैसे—

असम्भ्य	न सम्भ्य
नापसंद	ना पसंद
गैरवाजिब	न वाजिब
असम्भव	न सम्भव
अनिष्ट	न इष्ट

2. **उपपद तत्पुरुष** ऐसा समास जिनका उत्तरपद भाषा में स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त न होकर प्रत्यय के रूप में ही प्रयोग में लाया जाता है; जैसे—

नभचर	नभ में विचरण करने वाला
स्वर्णकार	स्वर्ण (सोना) का काम करने वाला
कृतज्ञ	उपकार को मानने वाला

3. **लुप्तपद तत्पुरुष** जब किसी समास में कोई कारक चिह्न अकेला लुप्त न होकर पूरे पद सहित लुप्त हो और तब उसका सामासिक पद बने तो वह लुप्तपद तत्पुरुष समास कहलाता है; जैसे—

ऊँटगाड़ी	ऊँट से चलने वाली गाड़ी
पवनचक्की	पवन से चलने वाली चक्की
वनमानुष	वन में रहने वाला मानुष
जलपोत	जल पर चलने वाला पोत

4. **अलुक् तत्पुरुष** जिस समास में पहले शब्द के बाद कारक-चिह्न किसी-न-किसी रूप में उपस्थित हो, तो वहाँ अलुक् तत्पुरुष समास होता है; जैसे—'मृत्युंजय' में पहले शब्द 'मृत्युम्' में संस्कृत के कर्म कारक की विभक्ति 'म्' उपस्थित है; जैसे—

युधिष्ठिर	युद्ध में (युधिः) स्थिर
धनंजय	धन (कुम्भ) को जय करने वाला
मनसिज	मन में (मनसि) जन्म लेने वाला
कर्मणिप्रयोग	कर्म से सम्बन्धित (कर्मणि) प्रयोग

3. कर्मधारय समास

जिस समास में **उत्तरपद प्रधान** हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का सम्बन्ध हो, वह कर्मधारय समास (Appositional Compound) कहलाता है। इस समास में विग्रह करने पर दोनों पदों (पूर्व व उत्तरपद) के मध्य 'के समान', 'है जो' आदि आते हैं; जैसे—

विशेषण-विशेष्य

समस्त पद	विग्रह
कालीमिर्च	= काली है जो मिर्च
नीलकमल	= नीला है जो कमल
नीलकंठ	= नीला है जो कंठ
महापुरुष	= महान है जो पुरुष
महादेव	= महान है जो देव
महावीर	= महान है जो वीर
सज्जन	= सत है जो जन
सद्गुण	= सद् हैं जो गुण
पीताम्बर	= पीत (पीला) है जो अम्बर
नील गगन	= नीला है जो गगन
महात्मा	= महान है जो आत्मा
लालटोपी	= लाल है जो टोपी
पुरुषोत्तम	= पुरुषों में है जो उत्तम
अधपका	= आधा है जो पका
श्वेताम्बर	= श्वेत है जो अम्बर
कृष्णसर्प	= कृष्ण है जो सर्प

उपमान-उपमेय

समस्त पद	विग्रह
चरणकमल	= कमल के समान चरण
चन्द्रमुखी	= चन्द्र के समान मुख वाली
कमलनयन	= कमल के समान नयन
घनश्याम	= घन के समान श्याम (काला)
लौहपुरुष	= लौह के समान पुरुष
मृगलोचन	= मृग के समान लोचन
चन्द्रमुख	= चन्द्र के समान मुख
कनकलता	= कनक के समान लता
प्राणप्रिय	= प्राणों के समान प्रिय

4. द्विगु समास

जिस समास में **उत्तरपद प्रधान** हो तथा **पूर्वपद संख्यावाचक** हो, द्विगु समास (Numeral Compound) कहलाता है; इसमें विग्रह करने पर समूह या समाहार का बोध होता है; जैसे—

समस्त पद	विग्रह
नवरत्न	= नौ रत्नों का समूह
सप्तदीप	= सात दीपों का समूह
सतमंजिल	= सात मंजिलों का समूह
सप्ताह	= सात दिनों का समूह
सप्तसिन्धु	= सात सिन्धुओं सागरों का समूह
दोपहर	= दो पहरों का समूह
चौराहा	= चार राहों का समूह
त्रिलोक	= तीन लोकों का समाहार

त्रिकोण	= तीन कोणों का समूह
त्रिभुवन	= तीन भुवनों का समूह
तिरंगा	= तीन रंगों का समूह
पंचमढ़ी	= पाँच मढ़ियों का समूह

5. द्वन्द्व समास

जिस समास में **पूर्वपद और उत्तरपद दोनों ही प्रधान** हों अर्थात् अर्थ की दृष्टि से दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व हो और उनके मध्य संयोजक शब्द (और, एवं, या, अथवा) का लोप हो, द्वन्द्व समास कहलाता है। अन्य शब्दों में जहाँ दो पदों के मध्य योजक चिह्न (—) का प्रयोग होता हो, तो द्वन्द्व समास (Copulative Compound) कहलाता है; जैसे—

समस्त पद	विग्रह
माता-पिता	= माता और पिता
राम-कृष्ण	= राम और कृष्ण
भाई-बहन	= भाई और बहन
पाप-पुण्य	= पाप और पुण्य
सुख-दुःख	= सुख और दुःख
नदी-नाले	= नदी और नाले
देश-विदेश	= देश और विदेश
खरा-खोटा	= खरा और खोटा
आचार-विचार	= आचार और विचार
उतार-चढ़ाव	= उतार और चढ़ाव

द्वन्द्व समास के भेद

- **इतरेतर द्वन्द्व** ऐसे द्वन्द्व समास जिनमें दो पद 'और' से जुड़े हों तथा अपना अलग अस्तित्व रखते हों 'इतरेतर द्वन्द्व' कहलाते हैं। इस समास द्वारा निर्मित पद हमेशा बहुवचन में प्रयोग होते हैं, क्योंकि ये दो या दो से अधिक पदों के मेल से बने होते हैं; जैसे—
भाई और बहन भाई-बहन
लड़का और लड़की लड़का-लड़की
- **समाहार द्वन्द्व** समाहार का शाब्दिक अर्थ समष्टि या समूह होता है। जब द्वन्द्व समास के दोनों पद 'और' समुच्चयबोधक से जुड़े होने के पश्चात् भी अपना अलग-अलग अस्तित्व न रखकर एक ही समूह का बोध कराते हैं, समाहार द्वन्द्व कहलाते हैं; जैसे—
दाल-रोटी अर्थात् भोजन के सभी मुख्य पदार्थ,
धन-धनाढ्य अर्थात् सब तरह के धनी लोग।
- **वैकल्पिक द्वन्द्व** जिस द्वन्द्व समास में दो पदों के बीच 'या' 'अथवा' आदि विकल्पसूचक अव्यय छिपे हों, उसे वैकल्पिक द्वन्द्व कहते हैं। इसमें विपरीतार्थक शब्दों का योग होता है; जैसे—दिन-रात, पाप-पुण्य आदि

6. बहुव्रीहि समास

जिस समास में न तो पूर्व पद प्रधान होता है और न ही उत्तर पद प्रधान होता है अर्थात् **कोई अन्य पद प्रधान होता है**। वह बहुव्रीहि समास (Attributive Compound) कहलाता है; जैसे—

समस्त पद	विग्रह
महात्मा	= महान् आत्मा है जिसकी अर्थात् ऊँची आत्मा वाला
नीलकण्ठ	= नीला कण्ठ है जिनका अर्थात् शिवजी
लम्बोदर	= लम्बा उदर है जिनका अर्थात् गणेशजी
गिरिधर	= गिरि को धारण करने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण

त्रिलोचन	=	तीन लोचन (आँखों) वाला अर्थात् शिव
दशानन	=	दस हैं आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण
मुरधीधर	=	मुरली धारण करने वाला अर्थात् श्रीकृष्ण
निशाचर	=	निशा (रात) में विचरण करने वाला अर्थात् राक्षस
चतुर्मुख	=	चार हैं मुख जिसके अर्थात् ब्रह्म

समास में अन्तर

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अन्तर

कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है; जैसे—‘लम्बोदर’ में ‘लम्बा’ विशेषण तथा ‘उदर’ विशेष्य है। इसी प्रकार ‘महात्मा’ में ‘महान’ उपमान तथा ‘आत्म’ उपमेय है। अतः ये दोनों समास कर्मधारय समास के उदाहरण हैं।

जबकि बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है; जैसे—‘गिरिधर’, गिरि को धारण करने वाला है जो अर्थात् कृष्ण। यहाँ गिरिधर, कृष्ण (संज्ञा) का विशेषण है। इस प्रकार कह सकते हैं कर्मधारय और बहुव्रीहि समास के अन्तर को समझने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना आवश्यक है; जैसे—

कमलनयन—कमल के समान नयन (कर्मधारय समास)
कमलनयन—कमल के समान नयन वाले अर्थात् विष्णु (बहुव्रीहि समास)
पीताम्बर—पीले हैं जो अम्बर (वस्त्र)—(कर्मधारय समास)
पीताम्बर—पीले अम्बर हैं जिसके अर्थात् कृष्ण—(बहुव्रीहि समास)
नीलकण्ठ—नीला है जो कण्ठ—(कर्मधारय समास)
नीलकण्ठ—नीला है कण्ठ जिसका अर्थात् शिव (बहुव्रीहि समास)

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अन्तर

द्विगु समास का पूर्वपद (पहला पद) संख्यावाची विशेषण होता है, जो उत्तर पद (दूसरे पद) की संख्या बताता है। इसमें दूसरा पद विशेष्य होता है। जबकि बहुव्रीहि समास में प्रथम पद संख्यावाचक होने के बाद भी निष्क्रिय होकर द्वितीय पद के साथ मिलकर किसी तीसरे पद का निर्माण करता है।

इस प्रकार बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है; जैसे—

चौमासा—चार मासों (महीनों) का समूह (द्विगु समास)
चौमासा—चार मासों का है जो अर्थात् वर्षा ऋतु का (बहुव्रीहि समास)
चतुर्भुज—चार भुजाओं का समूह (द्विगु समास)
चतुर्भुज—चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु (बहुव्रीहि समास)
दशानन—दस आननों का समूह (द्विगु समास)
दशानन—दस आनन हैं जिसके अर्थात् रावण (बहुव्रीहि समास)

द्विगु और कर्मधारय में अन्तर

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है, जो दूसरे पद की संख्या (गिनती) को बताता है। इसमें पहला पद ही विशेषण बनकर प्रयोग में आता है; जैसे—‘नवग्रह’—नव ग्रहों का समूह।

कर्मधारय समास का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नहीं होता है। इसमें कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है; जैसे—‘नवग्रह’—नव हैं जो ग्रह

त्रिभुवन—तीन भुवनों का समूह (द्विगु समास)
त्रिभुवन—तीन हैं जो भुवन (कर्मधारय समास)
नवरत्न—नौ रत्नों का समूह (द्विगु समास)
नवरत्न—नौ हैं जो रत्न (कर्मधारय समास)

सन्धि और समास में अन्तर

- सन्धि और समास दोनों का अर्थ मेल होता है, परन्तु सन्धि में वर्णों का (परीक्षा + अर्थ = परीक्षार्थी) तथा समास में शब्दों का (प्रति + दिन = प्रतिदिन) आ + अ शब्द मेल होता है। अतः समास में दो पदों का योग होता है जबकि सन्धि में दो वर्णों का मेल होता है।
- सन्धि में वर्णों के योग से वर्ण परिवर्तन भी होता है, जबकि समास में ऐसा नहीं होता है। समास का विग्रह होता है, जबकि सन्धि में दो पदों के बीच विच्छेद होता है।

महत्त्वपूर्ण समास विग्रह के उदाहरण

अव्ययीभाव समास

सामासिक पद	विग्रह	सामासिक पद	विग्रह
बारम्बार	बार-बार	अपादमस्तक	पद से लेकर मस्तक तक
प्रत्यक्ष	अक्षि के प्रति	घड़ी-घड़ी	घड़ी के बाद घड़ी
यथाविधि	विधि के अनुसार	निधङ्क	बिना धङ्क के
बेकाम	काम के बिना	निर्विवाद	बिना विवाद के
प्रत्येक	एक-एक के प्रति	प्रतिमास	हर मास
बेशर्म	बिना शर्म के	अनुकूल	मन के अनुसार
यथाकर्म	कर्म के अनुसार	सरासर	एकदम से
अकारण	बिना कारण के	बीचों-बीच	ठीक बीच में
एकाएक	अचानक ही	हाथों-हाथ	एक हाथ से दूसरे हाथ
परोक्ष	अक्षि (आँख) के परे	यशाशीघ्र	जितना शीघ्र हो
उपकूल	कूल के समीप	बार-बार	हर बार
अभूतपूर्व	जो पूर्व नहीं भूत (हुआ) है	दिनानुदिन	दिन प्रतिदिन
यावज्जीवन	जीवन पर्यंत	अनुरूप	रूप के अनुसार

तत्पुरुष समास

सामासिक पद	विग्रह	समास का नाम
अग्निपक्षी	अग्नि को भक्षण करने वाला	कर्म तत्पुरुष
गृहागत	गृह को आगत (आया हुआ)	कर्म तत्पुरुष
जलधर	जल को धारण करने वाला	कर्म तत्पुरुष
मुँहतोड़	मुँह को तोड़ने वाला	कर्म तत्पुरुष
सुख प्राप्त	सुख को प्राप्त करने वाला	कर्म तत्पुरुष
आतपजीवी	आतप (धूप) से जीने वाला	करण तत्पुरुष
अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित	करण तत्पुरुष
देहचोर	देह से चोर	करण तत्पुरुष
धर्मान्ध	धर्म से अंधा	करण तत्पुरुष
नियमाबद्ध	नियम से आबद्ध	करण तत्पुरुष

सामासिक पद	विग्रह	समास का नाम
गोशाला	गाय के लिए शाला	सम्प्रदान तत्पुरुष
मार्ग व्यय	मार्ग के लिए व्यय	सम्प्रदान तत्पुरुष
राहखर्च	राह के लिए खर्च	सम्प्रदान तत्पुरुष
शिवालय	शिव के लिए आलय	सम्प्रदान तत्पुरुष
फलाकांक्षी	फल के लिए आकांक्षी	सम्प्रदान तत्पुरुष
क्रियाहीन	क्रिया से हीन	अपादान तत्पुरुष
जलजात	जल से जात (उत्पन्न)	अपादान तत्पुरुष
धर्मच्युत	धर्म से च्युत	अपादान तत्पुरुष
बन्धनमुक्त	बन्धन से मुक्त	अपादान तत्पुरुष
वनरहित	वन से रहित	अपादान तत्पुरुष
आनन्दमठ	आनन्द का मठ	सम्बन्ध तत्पुरुष
त्रिपुरारि	त्रिपुर का अरि	सम्बन्ध तत्पुरुष
न्यायालय	न्याय का आलय	सम्बन्ध तत्पुरुष
प्रेमोपहार	प्रेम का उपहार	सम्बन्ध तत्पुरुष
बन्धनागार	बन्धन का आगार	सम्बन्ध तत्पुरुष
आनन्दमग्न	आनन्द में मग्न	अधिकरण तत्पुरुष
फलासक्त	फल में आसक्त	अधिकरण तत्पुरुष
रणवीर	रण में वीर	अधिकरण तत्पुरुष
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश	अधिकरण तत्पुरुष
अगोचर	न गोचर	नञ् तत्पुरुष
अचल	न चल	नञ् तत्पुरुष
अभिज्ञ	न अभिज्ञ	नञ् तत्पुरुष
अनपढ़	न पढ़	नञ् तत्पुरुष
अन्याय	न न्याय	नञ् तत्पुरुष
अपवित्र	न पवित्र	नञ् तत्पुरुष
अनन्त	न अन्त	नञ् तत्पुरुष
तुलादान	तुला के बराबर करके दिया जाने वाला दान	लुप्तपद तत्पुरुष
अश्रुगैस	अश्रु लाने वाली गैस	लुप्तपद तत्पुरुष
व्यर्थ	जिसका अर्थ चला गया है	लुप्तपद तत्पुरुष
मधुमक्खी	मधु एकत्र करने वाली मक्खी	लुप्तपद तत्पुरुष
मालगाड़ी	माल ढोने वाली गाड़ी	लुप्तपद तत्पुरुष
स्वर्ग	स्वयं गमन करना	उपपद तत्पुरुष
चर्मकार	चर्म का काम करने वाला	उपपद तत्पुरुष
दिनकर	दिन को करने वाला	उपपद तत्पुरुष
नभचर	नभ में विचरण करने वाला	उपपद तत्पुरुष
स्वस्थ	स्व में स्थित रहने वाला	उपपद तत्पुरुष

कर्मधारय समास

सामासिक पद	विग्रह	सामासिक पद	विग्रह
वीरबाला	वीर है जो बाला	भक्तिसुधा	भक्ति रूपी सुधा
छुटभैया	छोटा है जो भैया	महाकवि	महान है जो कवि

सामासिक पद	विग्रह	सामासिक पद	विग्रह
मृगनयन	मृग के समान नयन	पीतसागर	पीत है जो सागर
किसलयकोमल	किसलय के समान कोमल	परमेश्वर	परम है जो ईश्वर
प्राणधन	प्राणरूपी धन	नीलोत्पल	नील है जो उत्पल (कमल)
मुखारविन्द	अरविन्द के समान मुख	संसार सागर	संसार रूपी सागर

द्विगु समास

सामासिक पद	विग्रह	सामासिक पद	विग्रह
अठन्नी	आठ आनों का समाहार	पंचपात्र	पाँच पात्रों का समाहार
अष्टधातु	आठ धातुओं का समाहार	पंचमुख	पाँच मुख का समाहार
तिकोना	तीन कोनों का समाहार	सतसई	सात सौ (दोहा आदि) का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार	चवन्नी	चार आनों का समाहार
छमाही	छः माह का समाहार	सप्तशती	सात सौ (श्लोक आदि) का समाहार

द्वन्द्व समास

सामासिक पद	विग्रह	सामासिक पद	विग्रह
घर-द्वार	घर और द्वार	गाय-बैल	गाय और बैल
घर-संसार	घर और संसार	दालरोटी	दाल और रोटी
लोटा-डोरी	लोटा और डोरी	अमीर-गरीब	अमीर और गरीब
लव-कुश	लव और कुश	राम-कृष्ण	राम और कृष्ण
नमक-मिर्च	नमक और मिर्च	भाई-बहन	भाई और बहन
भला-बुरा	भला और बुरा	माता-पिता	माता और पिता

बहुव्रीहि समास

सामासिक पद	विग्रह
वीणापाणि	वीणा है पाणि (हाथ) में जिसके अर्थात् सरस्वती
नीलाम्बर	नीला है अम्बर जिसका अर्थात् बलराम
घनश्याम	घन के समान श्याम है जो अर्थात् श्रीकृष्ण
चक्रधर	चक्र को जो धारण करता है अर्थात् विष्णु
जलज	जल में उत्पन्न होता है जो अर्थात् कमल
जलद	जल देता है जो अर्थात् बादल
खगेश	खगों का ईश है जो अर्थात् गरुड़
कपीश	कपियों (बन्दरों) में ईश है जो अर्थात् हनुमान

वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

1. जब प्रथम शब्द संख्यावाची और द्वितीय शब्द संज्ञा हो, तो कौन-सा समास होता है? (UP TET 2019)
(a) द्विगु (b) कर्मधारय (c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि
2. 'आपबीती' शब्द में समास है (UP TET 2020)
(a) द्वन्द्व समास (b) कर्मधारय समास
(c) तत्पुरुष समास (d) द्विगु समास
3. 'धानकोठी' में कौन-सा समास है? (CGPSC Pre 2020)
(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) तत्पुरुष (d) द्विगु
4. 'चरणकमल' में समास है (UPPSC Pre 2018)
(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि
(c) द्वन्द्व (d) तत्पुरुष
5. इनमें से कौन-सा कथन पूरी तरह तत्पुरुष समास से सम्बन्धित है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2020)
(a) इसमें पूर्व पद प्रधान होता है
(b) इसमें पूर्व पद संख्यावाची होता है
(c) इसमें प्रायः उत्तर पद प्रधान होता है
(d) इसमें पूर्व पद अव्यय होता है
6. जिस सामासिक शब्द में पूर्व पद और उत्तर पद गौण होते हैं और कोई तीसरा पद प्रधान होता है, वहाँ कौन-सा समास होता है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2020)
(a) बहुव्रीहि (b) कर्मधारय (c) तत्पुरुष (d) द्वन्द्व
7. योगी शिवेन्द्र कुशासन पर विराजमान हैं। रेखांकित पद में समास है (HTET 2018)
(a) मध्यम पद लोपी तत्पुरुष (b) कर्मधारय
(c) बहुव्रीहि (d) द्वन्द्व
8. दो-या-दो से अधिक शब्दों के मेल से नए शब्द बनाने की क्रिया को कहते हैं। (उत्तराखण्ड 'समूह-घ' परीक्षा 2019)
(a) अलंकार (b) समास (c) विशेषण (d) रस
9. द्विगु समास के उदाहरण चुनिए (उत्तराखण्ड 'समूह-घ' परीक्षा 2019)
(a) चौमासा (b) नवरत्न (c) पंचवटी (d) ये सभी
10. 'यथासम्भव' में कौन-सा समास है? (UPSSSC VDO 2017)
(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय (c) तत्पुरुष (d) द्विगु
11. 'देशनिकाला' का सामासिक विग्रह होगा (मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)
(a) देश का निकला (b) देश में निकला
(c) देश में निकाला (d) देश से निकाला
12. 'पंचपात्र' में कौन-सा समास है? (मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)
(a) कर्मधारय समास (b) द्वन्द्व समास
(c) द्विगु समास (d) तत्पुरुष समास
13. 'कर्मधारय' और 'द्विगु' समास आते हैं (मध्य प्रदेश विस्तार अधिकारी 2017)
(a) अव्ययीभाव समास के अन्तर्गत
(b) बहुव्रीहि समास के अन्तर्गत
(c) द्वन्द्व समास के अन्तर्गत
(d) तत्पुरुष समास के अन्तर्गत
14. 'मृगनयन' में समास है (UPSSSC 2016)
(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) तत्पुरुष (d) द्वन्द्व
15. किस शब्द में तत्पुरुष समास है? (UP TET 2020)
(a) दौड़धूप (b) त्रिभुवन
(c) पीताम्बर (d) मधुमक्खी
16. निम्नलिखित में द्वन्द्व समास है (MPPSC Pre 2016)
(a) यथासम्भव (b) देशभक्ति
(c) देशविदेश (d) पीताम्बर
17. समास के कितने भेद हैं? (CGPSC Pre 2020)
(a) तीन (b) चार (c) पाँच (d) छः
18. किस समास में शब्दों के मध्य में संयोजक शब्द का लोप होता है?
(a) द्विगु (b) तत्पुरुष
(c) द्वन्द्व (d) अव्ययीभाव
19. पूर्वपद संख्यावाची शब्द है (UP TET 2016)
(a) अव्ययीभाव (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) द्विगु
20. 'अनुरूप' समस्त पद में कौन-सा समास है? (UP TET 2016)
(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय
(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि
21. 'देशान्तर' में कौन-सा समास है? (UPSSSC लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) बहुव्रीहि (b) द्विगु
(c) द्वन्द्व (d) कर्मधारय
22. 'चौमासा' में समास है (DSSSB असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) द्वन्द्व (b) कर्मधारय
(c) द्विगु (d) तत्पुरुष
23. 'पंचामृत' में कौन-सा समास है? (CGPSC परीक्षा 2015)
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) द्विगु
24. 'त्रिवेणी' शब्द में कौन-सा समास है? (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) द्वन्द्व (b) कर्मधारय
(c) बहुव्रीहि (d) द्विगु
25. 'देव जो महान् है' यह किस समास का उदाहरण है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि
26. 'योगदान' में कौन-सा समास है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) बहुव्रीहि (b) अव्ययीभाव
(c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय
27. निम्नलिखित में कर्मधारय समास किसमें है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) चक्रपाणि (b) चतुर्गुण
(c) नीलोत्पल (d) माता-पिता

28. 'चतुरानन' में समास है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि (c) द्विगु (d) द्वन्द्व
29. कौन-सा शब्द बहुव्रीहि समास का सही उदाहरण है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) निशिदिन (b) त्रिभुवन (c) पंचानन (d) पुरुषसिंह
30. 'चौराहा' में कौन-सा समास है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष (c) अव्ययीभाव (d) द्विगु
31. 'भाई-बहन' में कौन-सा समास है?
(a) द्वन्द्व (b) बहुव्रीहि (c) अव्ययीभाव (d) द्विगु
32. 'स्वर्णघट' का विग्रह है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2001)
(a) स्वर्ण में घट (b) घट में स्वर्ण (c) स्वर्ण का घट (d) घट के लिए स्वर्ण
33. अव्ययीभाव समास का उदाहरण है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2001)
(a) लवकुश (b) भरपेट (c) त्रिभुवन (d) छत्रधारी
34. शताब्दी में समास है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2001)
(a) द्वन्द्व (b) द्विगु (c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष
35. पीताम्बर में समास है (UP बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव (c) बहुव्रीहि (d) द्विगु
36. तत्पुरुष समास है
(a) शताब्दी (b) चौमासा (c) भाई-बहन (d) पदप्राप्त
37. 'गर्व शून्य' शब्द में समास है (UP बी.एड. प्रवेश परीक्षा 2010)
(a) कर्म तत्पुरुष (b) करण तत्पुरुष (c) सम्प्रदान तत्पुरुष (d) अपादान तत्पुरुष
38. 'रसगुल्ला' में कौन-सा समास है?
(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि (c) अव्ययीभाव (d) द्विगु
39. निम्नलिखित में से किस शब्द में समास और सन्धि दोनों हैं? (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) यज्ञशाला (b) स्वधर्म (c) जलोष्मा (d) पंकज
40. अधिकरण तत्पुरुष में (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) पहला पद प्रधान होता है (b) दूसरा पद प्रधान होता है (c) दोनों पद प्रधान होते हैं (d) प्रथम एवं तृतीय पद प्रधान होते हैं
41. 'राजपुत्र' शब्द में कौन-सा समास है?
(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष (c) द्विगु (d) कर्मधारय
42. 'हाथोंहाथ' शब्द में प्रयुक्त समास है (RRBTC/EECG परीक्षा HP इलेक्शन कानूनगो 2010)
(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष (c) द्वन्द्व (d) द्विगु
43. 'पंचानन' में कौन-सा समास है? (UP वन विभाग 2015)
(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि (c) कर्मधारय (d) द्विगु
44. 'सतसई' में कौन-सा समास है? (CGPSC Pre 2016/UP वन विभाग 2015)
(a) कर्मधारय (b) द्विगु (c) द्वन्द्व (d) तत्पुरुष
45. 'गंगाजल' शब्द में समास का भेद बताइए (UP वन विभाग 2015)
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व (c) अव्ययीभाव (d) कर्मधारय
46. 'वाचस्पति' किस समास का समस्तपद है? (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) नञ् तत्पुरुष (b) अलुक् तत्पुरुष (c) सम्बन्ध तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि
47. 'निर्विवाद' में समास है (UPTET 2013)
(a) कर्मधारय (b) अव्ययीभाव (c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि
48. निम्न में तत्पुरुष समास का उदाहरण है (UPTET 2013)
(a) एकतरफा (b) धनंजय (c) आत्मनिर्भर (d) वक्रतुण्ड
49. 'उपकूल' में कौन-सा समास है? (UPTET 2014)
(a) द्वन्द्व (b) द्विगु (c) अव्ययीभाव (d) तत्पुरुष
50. 'पतझड़' में समास है (REET 2016)
(a) करण तत्पुरुष (b) कर्म तत्पुरुष (c) बहुव्रीहि (d) द्वन्द्व
51. 'नीलकमल' में कौन-सा समास है? (CGPSC Pre 2020)
(a) बहुव्रीहि (b) कर्मधारय (c) द्विगु (d) द्वन्द्व
- निर्देश** (प्र.सं. 52-53) उपयुक्त समास चिह्नित कीजिए।
52. पथभ्रष्ट (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)
(a) द्वन्द्व (b) तत्पुरुष (c) कर्मधारय (d) अव्ययीभाव
53. अष्टाध्यायी (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)
(a) द्विगु (b) कर्मधारय (c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि
54. निम्नांकित में द्विगु समास नहीं है (MPPSC Pre 2016, 15)
(a) शताब्दी (b) नकटा (c) अष्टभुजा (d) चतुर्भुज
55. 'मृत्युंजय' पद में कौन-सा सही है? (UPTET 2018)
(a) द्विगु (b) कर्मधारय (c) बहुव्रीहि (d) द्वन्द्व
56. 'यावज्जीवन' पद में समास है (HTET 2018)
(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष (c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि
57. निम्नांकित में से किस शब्द में तत्पुरुष समास है? (UPTET 2017)
(a) वाचस्पति (b) घनश्याम (c) त्रिभुवन (d) चन्द्रशेखर
58. 'वनगमन' में समास है (CGTET 2017)
(a) द्वन्द्व समास (b) तत्पुरुष समास (c) कर्मधारय (d) अव्ययीभाव समास
59. सप्तर्षि में समास है (UPPCS 2016)
(a) कर्मधारय (b) तत्पुरुष (c) द्वन्द्व (d) द्विगु

60. 'अजातशत्रु' में कौन-सा समास है? (UPTET 2016)
 (a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि
61. 'चन्द्रशेखर' शब्द में समास है (UPTET 2013)
 (a) तत्पुरुष (b) द्विगु (c) बहुव्रीहि (d) कर्मधारय
62. निम्नलिखित में से द्विगु समास का उदाहरण है (HTET 2012)
 (a) त्रिभुवन (b) त्रिनेत्र (c) एकदन्त (d) दशानन
63. द्विगु समास का उदाहरण है (UPTET 2011)
 (a) माता-पिता (b) यथाशक्ति (c) नवग्रह (d) पीताम्बर
64. निम्न में से किस शब्द में बहुव्रीहि समास है? (HTET 2014)
 (a) चौराहा (b) पंसेरी (c) शताब्दी (d) पंजाब
65. 'पॉकटमार' शब्द में समास है (CGTET 2011)
 (a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
 (c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व
66. निम्नांकित शब्दों में से 'सम्बन्ध बहुव्रीहि' सामासिक शब्द है
 (a) दशानन (b) लुप्तपद (c) प्राप्तोदक (d) उपहृतपशु
67. कौन-सा शब्द अव्ययीभाव समास का उदाहरण है? (UPTET 2011)
 (a) नवग्रह (b) गौंठकर (c) महात्मा (d) आमरण
68. 'यथाशीघ्र' शब्द का समास बताइए। (UPTET 2011)
 (a) अव्ययीभाव (b) द्वन्द्व
 (c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष
69. 'जनतन्त्र' शब्द निम्नांकित में से किस समास-प्रकार के अन्तर्गत है? (CGTET 2011)
 (a) सम्प्रदान तत्पुरुष समास (b) कर्म तत्पुरुष समास
 (c) सम्बन्ध तत्पुरुष समास (d) करण तत्पुरुष समास
70. 'अष्टाध्यायी' में समास है (BTET 2011)
 (a) द्वन्द्व (b) द्विगु
 (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय

उत्तरमाला

1. (a)	2. (c)	3. (c)	4. (a)	5. (c)	6. (a)	7. (b)	8. (b)	9. (d)	10. (a)
11. (d)	12. (c)	13. (d)	14. (b)	15. (d)	16. (c)	17. (d)	18. (c)	19. (d)	20. (c)
21. (d)	22. (c)	23. (d)	24. (d)	25. (c)	26. (d)	27. (c)	28. (b)	29. (d)	30. (d)
31. (a)	32. (c)	33. (b)	34. (b)	35. (c)	36. (d)	37. (b)	38. (a)	39. (c)	40. (b)
41. (b)	42. (a)	43. (d)	44. (b)	45. (a)	46. (b)	47. (b)	48. (c)	49. (c)	50. (c)
51. (b)	52. (b)	53. (a)	54. (b)	55. (c)	56. (a)	57. (a)	58. (b)	59. (d)	60. (d)
61. (c)	62. (a)	63. (c)	64. (d)	65. (b)	66. (a)	67. (d)	68. (a)	69. (c)	70. (b)